International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मुर्शिदाबाद की कलात्मक यात्रा

(1716 से तक 1870)

ऊषा

विभागध्याक्ष, सहायक शिक्षक
ललित कला विभाग
संत बाबा भगत सिंह महिला महाविद्यालय
सुखानंद मोगा

भारतीय कला इतिहास में कई पड़ाव देखे जा सकते है । हर पड़ाव की कला पहले पड़ाव से कुछ भिन्नता लिए हुए है । ये भिन्नताएं कभी शासकीय परिवर्तन से आई तो कभी बाहरी प्रभाव से । किंतु प्रत्येक परिवर्तन, प्रत्येक प्रभाव को भारतीय कला ने अपने भीतर कुछ इस तरह संजोया कि वह भारतीय कला का अटूट हिस्सा बन गया । ऐसे ही एक पड़ाव का नाम है – कंपनी पेंटिंग या कंपनी शैली या कंपनी कलम ।

कंपनी पेंटिंग, 18वीं शताब्दी तथा 19वीं शताब्दी के मध्य भारतीय कलाकारों द्वारा बनाए गए, उन चित्रों को कहा जाता है जो भारतीय तथा यूरोपीय शैली के मिश्रण से बने तथा यूरोप के लिए ही बने ।[1] इन चित्रों के लिए "ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी" के अधिकारी कलाकारों को संरक्षण प्रदान करते थे ।[2] इस शैली में चित्र जलरंग में, माईका पर, ग्लास पर, तथा सीप पर बनाए जाते थे ।[3]

यह शैली राजपूत शैली तथा मुगल शैली के पारम्परिक तत्वों तथा पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य के मिश्रण से बनी है ।[4] कंपनी शैली में अधिकतर चित्र छोटे आकार में बने हैं, किंतु पक्षियों, वृक्षों आदि से परिपूर्ण प्राकृतिक चित्र विशाल आकार में बने है ।[5]

[1]- Archer,Mildred;Company Painting,p.11
[2]- http://en.wikipedia.org/wiki/company style
[3]- http:// en.wikipedia.org/wiki/company style+schools of Indian painting
[4]- Ibid
[5]- http:en.wikipedia.org/wiki/company style+schools of Indian painting

"कम्पनी शैली" को पहले पटना शैली कहा जाता था बाद में अनेक स्थानों पर इस शैली के फैलने से इसे अधिक व्यापक नाम "कम्पनी शैली" दिया गया ।[6]

कंपनी शैली की स्थापना भारत में अंग्रेजी शासन से जुड़ी है। अंग्रेजी शासन के फलस्वरूप भारतीय कला के क्षेत्र पर दो प्रभाव पड़े । ये प्रभाव निम्नलिखित है –

प्रथम – स्थानीय कलाकारों ने अपनी समझ के अनुसार पश्चिमी शैली के मिश्रण से एक नई शैली का सूत्रपात किया ।

द्वितीय – कला के संरक्षण वर्ग में अपनी कला के प्रति उपेक्षा तथा पश्चिमी कला तत्वों के प्रति आदरभाव उत्पन्न हुआ जिस कारण राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल आदि शैलियों का ह्रास होने लगा ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना लगभग 1600 ई॰ में इंग्लैंड में हुई ।[7] इस कम्पनी ने भारत से व्यापारिक संबंध बनाने के उद्देश्य से सूरत, बम्बई आदि स्थानों पर अपनी कोठियाँ बनाई। भारत में राजनैतिक उथल–पुथल के कारण ज्यों–ज्यों राज्य कमजोर पड़ते गए, ईस्ट इण्डिया कम्पनी बड़ी सावधानी से अपनी साम्राज्यवादी नीतियों का विस्तार भारत में करती गई ।

1857 ई॰ संग्राम के बाद अधिकतर भारत के शासन की बागडोर सीधा इंग्लैण्ड के हाथों में चली गई।[8] जिस समय अंग्रेजों ने भारत में पर्दापण किया उस समय भारतीय कला निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर थी। किंतु फिर, शासन में आई उथल–पुथल के कारण कलाकार का मन भी आशंकित व अशांत हो गया। वे निराश्रित हो गए। इसी समय दरबारी कला जो आकाशीय ऊँचाई पर टिमटिमा रही थी। अब दिए की बुझती लौ सी हो गई थी।

---

[6]. अग्रवाल, आर॰ ए॰, कला विलास, 181
[7]. अग्रवाल गिरजि किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, 14
[8]. अग्रवाल गिर्राज किशोर आधुनिक भारतीय चित्रकला 14

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कलाकार मुर्शिदाबाद, लखनऊ, हैदराबाद, पटना एवं बनारस में जाकर काम की तलाश में जुट गए । कंपनी में केवल अधिकारी मात्र न थे बल्कि हर पेशे से जुड़े लोग थे । इनमें कुछ कलाकार भी थे जिनसे भारतीय कलाकारों ने कला के गुर सिखे । भारतीय कलाकारों ने अपनी कला के मूल तत्वों को न छोड़ते हुए उसमें यूरोपीय कलाकारों से सीखे यूरोपीय कला के तत्व भी मिला दिए।

धीरे–धीरे इस शैली का फैलाव अंग्रेजी शासन के साथ–साथ देश के लगभग सभी क्षेत्रों तक पहुँच गया । बाजारू चित्रकारों ने भी अब अपनी कूची को इस नई शैली के रंग में डुबो कर अंग्रेजों की पसंद से चित्र बनाने शुरू कर दिए ।

मिल्ड्रेड आर्चर ने कम्पनी शैली को तीन भागों जो कि क्रमशः दक्षिणी प्रदेश, पूर्वी व उच्च प्रदेश, उत्तरी व पश्चिमी प्रदेश है, में विभक्त किया है । इन्हीं में से एक केंद्र है मुर्शिदाबाद ।

मुर्शिदाबाद कम्पनी के पूर्वी व उच्च प्रदेश का प्रमुख केंद्र रहा किंतु यह शहर कम्पनी कला का केंद्र कई वर्षों के बाद बना ।

नवाब मुर्शिद कुली खान के नाम पर बना यह शहर पहले मुक्सदाबाद[9] के नाम से जाना जाता था । बागीरथी (भागीरथी) नदी के तट पर 5 मील तक फैला यह शहर 30 मील के दायरे में स्थित है । सैद्धांतिक रूप से इस शहर का नवाब मुगल साम्राज्य के राजा का वायसराय था, किंतु व्यवहारिक रूप से वह अर्धस्वतंत्र शासक था । यह शहर बंगाल, बिहार, उड़ीसा के मुगल प्रशासन का केंद्र था ।[10] मुगल साम्राज्य की केंद्रीय सत्ता के विघटन में यह राज्य एक स्वतंत्र राज्य बन गया तथा नवाब मुर्शिद कुली खान (1716–1727 शासन काल) एक योग्य शासक बन कर उभरे ।[11] नवाब मुर्शिद कुली खान के व्यक्तित्व तथा व्यवहारिक विशेषताओं ने

9- Gay, John : Arts of India, 177
10- Archer, Mildred : Company Paintings, 73
11- Guy, John : Arts of India, 177

उन्हें कला का संरक्षक[12] बना दिया । मुगल साम्राज्य के पतन के कारण जो कलाकार बेरोजगार हो गए थे, उनमें से कुछ कलाकार नवाब का संरक्षण पाने के लिए मुर्शिदाबाद चले आए । जल्द ही यह शहर कला केंद्र बन कर उभरा । इस समय त्यौहारों के अधिक चित्र बने । जैसे– मोहरर्म ईद आदि । इस समय के कुछ चित्र ब्रिटिश ऑफिस लाइब्रेरी में सुरक्षित रखे है । इन चित्रों को बनाने वाले कलाकारों में अधिकतर मुगल दरबारी कलाकार थे, इसलिए इन चित्रों की शैली मुगल कला से काफी मिलती–जुलती है ।

अगले नवाब का नाम सुजाऊद्दीन मोहम्मद खान (1727–1739 शासन काल) था । इस नवाब के शासन काल में बने चित्रों का कोई ब्यौरा नहीं मिलता ।

अली वर्दी खां जिन्होंने मुर्शिद कुली खान के अधीन शासन करना आरम्भ किया था[13] । बंगाल के नवाब के रूप में सामने आए। इन्होंने 1740 से 1756 (अपनी मृत्यु तक) तक अपने प्रांत पर शासन किया । इनके प्रांत की राजधानी मुर्शिदाबाद थी ।[14]

मुर्शिद कुली खान के शासन काल में आए कलाकार अब तक सुदृढ़ स्थिति में पहुंच चुके थे, क्योंकि नवाब अली वर्दी खान ने उन्हें ना केवल संरक्षण दिया बल्कि सुदृढ़, सुरक्षित तथा स्थिर शासन काल भी दिया । ऐसी स्थिति में कलाकार अपनी कला को विकसित कर पाए ।

इस समय की मुर्शिदाबाद की कला पर स्कैलटन, रॉबर्ट लिखते है कि इस समय के मुर्शिदाबाद के चित्रों पर उत्तर औरंगजेब काल की दरबारी चित्रकला का प्रभाव तथा शुरूआती मुर्शिदाबाद के गहरे तथा धुँधले रंग संयोजन का प्रभाव साफ

12- Ibid.

13- Archer, Mildred : Company Paintings, 73

14- Ibid.

देखा जा सकता है। यह प्रभाव बाद में 18वीं शताब्दी के मध्य तक आते–आते मुर्शिदाबाद का पहचान बन गया ।[15]

मुर्शिदाबाद को एक कला केंद्र बनाने का श्रेय काफी हद तक नवाब अली वर्दी खां को जाता है । उनकी कला में रूचि तथा संरक्षण प्रदान करने के स्वभाव के कारण ही मुर्शिदाबाद शैली के चित्र चलन में आए ।

इतिहासज्ञ गुलाम हुसैन सलीम का मानना है कि नवाब अली वर्दी कला तथा संस्कृति का एक उत्सुक संरक्षक थे । इनके समय में बने चित्र है– नवाब अलीवर्दी खां शिकार करते हुए, बगीचे की छत पर अपने भतीजे से बातचीत करते हुए । ये चित्र इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी में है ।

ये चित्र इस बात का प्रमाण है कि उम्रदराज नवाब ने दरबार तथा शिकार के चित्रों को प्रमुखता प्रदान की है । इस समय के चित्र शांत भाव तथा गहरे रंग लिए हुए है । दोनों ही तरह के चित्रों में (दरबार तथा शिकार) सफेद व श्याम रंगों का आधिक्य है।

इस समय के एक कलाकार दीप चाँद ने कई चित्र (नवाब के शिकार के, नवाब सभा को सम्बोधित करते हुए) बनाए ।

नवाब अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद यह राज्य तथा पूरा बंगाल एक बड़े परिवर्तन का साक्षी बनने जा रहा था । बंगाल कपड़ा निर्माण तथा निर्यात का महत्त्वपूर्ण केंद्र था । साथ ही यहां मजदूर काफी सस्ते में मिल जाया करते थे । इन स्थितियों के कारण यूरोपिय कम्पनीयाँ आकर्षित हुई । क्योंकि यह स्थितियाँ व्यापार के लिए सकारात्मक थी । इसी आकर्षण के चलते ब्रिटिशों ने सूत तथा रेशम की वस्तुएँ बनाने का कारखाना कासिम बाजार[16] के निकट खोला । 1756 में अली वर्दी खां की मृत्यु होते ही सारा प्रांत एक अशांत तथा उग्र प्रांत में परिवर्तित हो गया । प्रशासन के बिखरने से व्यापार में भी रूकावटें आ गई । कलाकार वर्ग

15- Skelt,R.W.Murshidabad Painting,Marg,vol.x,no.10,Dec,1956p.10-22

16- Archer, Mildred : Company Paintings, 073

में भी अशांति फैल गई । इस स्थितियों को भाँप कर ब्रिटिश अब बंगाल पर शासन करने के अवसर तलाशने लगे । अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला गद्दी पर बैठा । अपने कई गुणों के साथ–साथ वह चित्रकला का संरक्षक[17] भी था । उसकी उदारता के कारण चित्रकला प्रगति की ओर अग्रसर होने लगी ।

औपचारिक दरबारी चित्रों के साथ–साथ चित्रकारों को महिलाओं के चित्र तथा रागमाला पर आधारित चित्र बनाने के लिए प्रेरित किया जाता था । सिराजुद्दौला के छोटे से शासन काल में चित्रों में नवीनता ने अपना परिचय दिया । महिला संबंधी चित्रों में नवाब की रूचि को देखकर कलाकारों ने श्रृंगारपरक विषयवस्तुओं पर अधिक चित्र बनाए ।

अगले ही वर्ष 1757 में प्लासी के युद्ध में क्लाइव के हाथों नवाब की हार हुई, अब ब्रिटिश बंगाल के मालिक बन गए । 1690 के दशक में ब्रिटिशों का स्वामीत्व मुगलों के अधीन था किन्तु अब स्थिति बदल गई थी । फार्ट विलियम ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हिस्से वाले बंगाल का शासन अपने हाथों में ले लिया ।[18] इससे कला के नए बाजार का आधार तैयार हो रहा था ।

सिराजुद्दौला को गद्दी से हटा कर उन्होंने मीर जाफर को नवाब के रूप में पदासीन किया । 1757–1760 ई॰ तक शासन करने वाले इस नवाब के शासन काल में चित्रों में कोई शैलीगत प्रभाव अथवा बदलाव नहीं आया । जबकि इस कला ने सिराजुद्दौला के समय में पाया नयापन व प्रखरता को खो दिया । इसी समय लखनऊ से पूरननाथ, अलीआस हुनहर, नाम के दो कलाकारों ने मुर्शिदाबाद में आकर चित्रण आरम्भ कर दिया । इस समय के चित्रों में अलीवर्दी खान के चित्रों की शैली दिखाई पड़ती है । चित्रों में नवाब के शबीह चित्र, औपचारिक दरबारी चित्र देखने को मिलते हैं ।

17- Skelt,R.W.Murshidabad Painting,p.10-22

18- Guy,John:Arts Of India,178.

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पूरन नाथ द्वारा बनाए गए एक चित्र में नवाब को उसके पुत्र के साथ बगीचे का आनंद लेते दिखाया गया है ।

जल्द ही 1760 में मीर कासीम ने मीर जाफर से राजगद्दी छिन ली व स्वयं उस पर आसन्नारूढ़ हो गया । लगभग अगले चार साल तक उसने शासन किया । अपने शासन काल में इन्होंने भी कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया ।इन्होने अपन कलाकारों को केवल नवाब व उसके अधिकारियों के चित्र बनाने तक सीमित रखा । इस समय की शैली नवाब अलीवर्दी खान के समय की शैली से उत्पन्न हुई थी ।[19] इस शैली में चित्र बनाने वाले कलाकारों में दीप चांद का नाम प्रमुख है ।[20] लखनऊ से आए कलाकारों ने नवाब मीर कासीम के लिए भी चित्र बनाए ।

प्रख्यात कलाकार दीप चाँद की कूची से बना मीर कासीम का चित्र विक्टोरिया एण्ड एलबर्ट म्यूजियम में रखा है । साथ ही इस कलाकार ने इस समय कुछ यूरोपिय अधिकारियों तथा कुछ भारतीयों के भी व्यक्ति चित्र बनाए । मीर कासिम के शासन काल में मुर्शिदाबाद शैली में एक बड़ा परिवर्तन उस समय आया जब लखनऊ से आए कलाकारों के कारण मुर्शिदाबाद शैली पर प्रभाव के रूप में मुगल कलम का स्थान लखनऊ कलम ने ले लिया । चित्रों में अब पहले की तुलना में अधिक परिवर्तन आ गए थे । नवाब के शबीह चित्रों तथा दरबारी चित्रों में अब अधिक भाव आ गए थे ।`जमीन पर ग्रे और ब्राऊन (श्याम तथा भूरा) रंग की स्टिप्लींग की जाने लगी । तालाब में पीले रंग के लीली के फूल चित्रित किए जाने लगे जो कि लखनऊ कलम की पहचान है ।

इसी समय मिथिकीय विषयों पर आधारित चित्रों की मांग बढ़ने लगी ।[21] इन विषयों पर चित्रण के लिए जमींदारों तथा अधिकारियों द्वारा कलाकारों को संरक्षण

19- Guy, John: Arts of India, 180.
20- Skelt,R.W.Murshidabad Painting,Fig.11
21- Skelt,R.W.Murshidabad Painting,Fig.12

प्रदान किया जाने लगा । समय के साथ–साथ ऐसे संरक्षकों की संख्या तथा ऐसे चित्रों की मांग बढ़ने लगी ।[22]

1763 में ब्रिटिश अधिकारियों ने मीर कासिम को परास्त कर उम्रदराज मीर जाफर को अपने हाथों की कठपुतली[23] बना कर दूसरी बार राजगद्दी पर बैठा दिया । इससे कला के क्षेत्र में फिर से एक बड़ा परिवर्तन आया । कला का संरक्षण दरबारी हाथों से निकल कर समाज के उच्च वर्ग[24] अर्थात् जमींदारों, व्यापारियों तथा साथ ही साथ ब्रिटिश अधिकारियों, जो मुर्शिदाबाद के आस–पास के क्षेत्रों में रहते थे, के हाथों में चला गया । इन संरक्षकों ने कलाकार को धर्म पर आधारित चित्र तथा पिरका (चित्र श्रृंखला या एलबम) जिसमें मुगल शासकों, नवाबों तथा रागमाला के चित्र भी हो, बनाने को कहा ।

मुर्शिदाबाद के कलाकारें को अब ज्ञात हो चुका था कि अब उन्हें संरक्षण नवाबों से नहीं मिल सकता । इसलिए कलाकारों ने अब नवाबों, रागमाला आदि भारतीय विषयों पर चित्रण करने के साथ ही ऐसे नए विषय खोजने आरम्भ कर दिए जो यूरोपियन बाजार को आकर्षित कर सके । चित्रकारों ने चित्रों में अब यूरोपिय शैली व तकनीक का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया ।

1770–80 के दौरान रिचर्ड जॉनसन जोकि कम्पनी का अधिकारी था भारत आया । इसी दौरान उसने कलकत्ता आकार मुर्शिदाबाद शैली के चित्रों का संग्रह किया ।[25] इससे पहले विलियम फुलस्टॉन ने भी मुर्शिदाबाद शैली के कुछ कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया था ।[26] कलाकार अपनी शैली में परिवर्तन करने के प्रयास में जुट गया । कलाकार अब ग्वारा तथा शीत रंगों का अधिक प्रयोग

22- Guy,Jhon:Arts Of India,180
23- Ibid.
24- Guy,Jhon:Arts Of India,180
25- Archer M.and Folk,T.,Indian Miniature In IndianOffice Library,P.193-210
26- Archer, Mildred : Company Paintings, p.73

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करने लगा ।[27] ब्रिटिशों का जलरंग व गहरे धुंधले रंगों की ओर आकर्षण देखकर कलाकारों ने अपना माध्यम तथा शैली दोनों ही बदल ली । 1775 ई॰ के बाद कलाकारों के लिए मुर्शिदाबाद धीरे–धीरे लगभग पूरा ही बदल गया । इसी स्थिति के कारण कलाकारों ने ब्रिटिश बंगलों को भी चित्रित करना शुरू कर दिया ।

भास्कर जो कि आइवरी पर नक्काशी किया करते थे ने क्लाईव को शतरंग का सैट बनाकर दिया था ।[28] इस तरह नक्काशी करने वालों को अपनी शैली बदलते देख चित्रकार ब्रिटिशों को रूझाने के लिए और भी तीव्रता से नए–नए तरीके खोजने लगे । चित्रकारों ने ब्रिटिशों को आकर्षित करने के लिए कई प्रयोग तथा प्रयास किए । पहले प्रयास के रूप में कलाकारों ने कागज पर लधु चित्रण शैली में शबीह चित्र बनाए । इस तरह के कुछ शबीह चित्र 1782 के लगभग बने ।[29] इन चित्रों में अंग्रेजों को टोपी पहने, गद्दे पर लेट कर हुक्का पीते, हाथ में पान का बक्श ा लिए चित्रित किया गया । अंग्रेजी औरतों के भी कई चित्र बने है । इन चित्रों की सरल रेखाएँ दर्शाती है कि कैसे सरलता से मुगल मिनिऐचर शैली, ब्रिटिश कला सिद्धांतों से मिल गई ।[30]

1785 में ब्रिटिश कलाकार जॉर्ज फारिगंटन के मुर्शिदाबाद पहुंचने से स्थानीय कलाकार ज्यादा चौकन्ना हो गया ।[31] इस प्रकार शताब्दी के अंत तक आते–आते मुर्शिदाबाद के कलाकारों की ना केवल शैली बल्कि माध्यम भी बदल गया । कलाकार तान के रूप में सिपिया रंग[32] का प्रयोग करने लगे थे । कलाकारों को ज्ञात हो चला था कि ब्रिटिशों को भारतीय त्यौहार आकर्षित करते है । इसी को कलाकार ने अपने चित्रण का विषय बना लिया । यह ब्रिटिशों को आकर्षित करने

27- Archer, Mildred : Company Paintings, p.74
28- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The British(1770-1880) p.23
29- Ibid
30- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The British(1770-1880) p.23
31- Archer, Mildred : Company Paintings, p.74
32- Archer, Mildred : Company Paintings, 074

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के लिए कलाकारों द्वारा किया गया तीसरा प्रयास था ।[33] त्यौहारों में दिवाली, मोहरर्म, गणेश पूजा, काली पूजा, होली, चैत, ईद तथा हिंद और मुस्लिम विवाह से संबंधित चित्र बनते थे । इस प्रकार के चित्र बनाने के लिए कलाकार ने माइका[34] को चुना । 18वीं शताब्दी में इसे त्यौहारों के चित्रण के लिए अधिक प्रयोग किया जाने लगा । इसके साथ ही माईका के अन्य प्रयोग भी सामने आने लगे । इनमें से एक था अलंकरण की प्रतिकृति तैयार करना ।[35] माईका पर बने चित्रों को आसानी से कागज पर ट्रेस किया जा सकता था । इसके अलावा माईका एक ऐसा माध्यम था जो ब्रिटिशों को आकर्षित करता था । बाद में इन विषयों पर आधारित चित्र कागज पर भी बनने लगे । धीरे–धीरे असाधारण स्थानीय व्यक्तित्वों का चित्रण भी त्यौहारों के विषयों के तरह ही चित्रित होने लगा ।

कलाकारों द्वारा ब्रिटिशों को आकर्षित करने के प्रयास में एक अन्य प्रयास भी विचारनीय है । इस प्रयास के अंतर्गत कलाकारों ने मुर्शिदाबाद के नवाब से लेकर आम जन–जीवन के चित्र बनाए । इस प्रयास में बनाए गए लगभग सभी चित्रों में रंग योजना हल्की है। इन चित्रों को देखकर स्पष्ट ज्ञात होता है कि ये चित्र स्थानीय अंग्रेजों की पंसद को ध्यान में रखकर बनाए गए है । इस प्रकार के चित्र 1840 ई॰ तक बनते रहे । माईका पर बनने वाले चित्रों की मांग धीरे–धीरे बढ़ने से इनमें कई अन्य विषयों ने प्रवेश पा लिया। ब्रिटिश नागरिक कलाकारों से अपनी पसंद के विषयों पर चित्र बनवाते थे । इन चित्रों के विषयों के रूप में वाहन, व्यापार, नौकर आदि अधिक लोकप्रिय थे ।[36]

33- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The British(1770-1880) p.23
34- See Archer, Mildred : Company Paintings,p.191-200
35- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The British) p.24
36- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The Britishp.24

जॉर्ज फारिंगटन के मुर्शिदाबाद में आने पर स्थानीय कलाकार उनसे ब्रिटिशों को आकर्षित कर सकने वाली तकनीक तथा विषयवस्तुओं के बारे में जान[37] चुके थे ।

इसी दिशा में काम करते हुए स्थानीय कलाकारों ने कैप्टन मुनडे के पैन, पैंसिल से बने चित्रों की बड़ी सावधानी से प्रतिकृतियाँ तैयार की ।[38] इन चित्रों में एलिफेंट क्रॉसिंग अनूलाह, सिरन नियर हरिद्वार, द लायन एण्ड द एलिफैंट, द टाइगर'स अटैक ऑन एलिफेंट आदि है ।[39] अन्य कई चित्र श्रृंखलाएं भी बनी । इन चित्रों में अंग्रेजों को टॉपी पहने बनाया गया है । साथ ही भारतीय अधिकारियों को भी चीता, बाघ, भालू, हिरण आदि का शिकार करते बनाया गया है । कुछ नाटकीय चित्र भी बने जैसे बाघ द्वारा अंग्रेज पर आक्रमण आदि ।

कुछ चित्रों में ब्रिटिश सैनिकों को झण्डों तथा तोपों के साथ चित्रित किया गया है । इस तरह की विषय वस्तु वाले चित्र अधिक लोकप्रिय ना हो पाए तथा ना ही श्रृंखला के रूप[40] में विकसित हो पाए । किंतु ये चित्र इस बात का प्रमाण है कि कैसे भारतीय कलाकारों ब्रिटिशों की रूचि को खोजा, उसे पहचाना। चित्र बनाने वाले हाथ और हृदय तो भारतीय था किंतु इन पर ब्रिटिश शैली का प्रभाव था ।

1820—30 के दशक तक मुर्शिदाबाद के चित्रों में यूरोपिय प्रभाव आसानी से पहचाना जा सकता है ।[41] इस प्रभाव का अंदाजा इसी घटना से लगाया जा सकता है कि नवाब हुमायुन जाह (1824—36) ने अपने लिए एक महल बनवाया ताकि वह उस ओर शिकार के लिए आने वाले ब्रिटिश अधिकारियों का मनोरंजन

37- Archer Mildred : Company Paintings, 74

38- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The Britishp.24

39- See, Archer, Mildred : Company Paintings, 199-200

40- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The Britishp.23

41- Archer, Mildred : Company Paintings, 74

कर सके । इसे बनवाने के लिए उन्होंने टुंकन मैकलिओड जोकि बंगाल इंजिनयन का वास्तुशिल्पी था को लगाया ।[42] इस महल की दीवारों पर अपने तथा अपने पुत्र के बड़े–बड़े चित्र तैलरंग में बनवाने के लिए उन्होंने विलियम हट्चिसन[43] नाम के ब्रिटिश कलाकार को लगाया । इस प्रकार दौरे पर आने वाले कुछ ब्रिटिश कलाकारों, नवाबों तथा अधिकारियों द्वारा यूरोपिय शैली को बढ़ावा देना तथा कलाकारों का संरक्षण प्राप्त करने के लिए यूरोपिय शैली को अपनाना आदि परिस्थितियों ने मुर्शिदाबाद मे कंपनी शैली को ऊँचाई तक पहुँचा दिया ।

इस शैली में काम करने वाले कलाकारों में लूच्चन सिंह नामक एक कलाकार थे । इन्होंने जॉर्ज पॉटर नामक एक अंग्रेज का व्यक्ति चित्र[44] बनाया था ।

बंगाल तथा बिहार के नवाब भी अब स्थानीय कलाकारों से इस नई शैली में शिकार के दृश्य चित्रित करवाते[45] थे । इन चित्रों को वे ब्रिटिश अधिकारियों को खुश करने के लिए भेंट स्वरूप दे दिया करते थे । बाजार स्थिर तथा मजबूत स्थिति में पहुंच गया था।

कम्पनी शैली के प्रमुख चित्र मुर्शिदाबाद केंद्र के कलाकारों द्वारा बनाए गए है । इनमें से अधिकतर चित्र शृंखला के रूप में बने है जैसे – नाइन ड्राइंग डिपिक्टिंग अ दरबार एट द मुर्शिदाबाद कोर्ट एण्ड हिंदु एण्ड मुस्लिम फेस्टिवल्स एण्ड रिलिजियस सिनस[46], सेवन पोर्टरेट ऑफ इण्डियन मैन एण्ड वूमैन ।[47]

42- Ibid.
43- Ibid.
44- Archer, Mildred : Company Paintings, p.74
45- Ibid
46- Ibid,p. 78
47- See, Archer, Mildred : Company Paintings,p.75-83

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्यक्ति चित्र अधिकतर ब्रिटिश अधिकारियों के ही बने है। मुर्शिदाबाद में ये चित्र 1850 ई० तक बनते रहे ।[48] किंतु बाद में स्थानीय कलाकार ब्रिटिश अधिकारियों की बदलती रुचि को ना पहचान पाए, ना ही उनके अनुसार रूचिपूर्ण चित्र ही बना पाए ।

कासिम बाजार टैक्सटाइल उद्योग भी पाश्चात्य प्रतिस्पर्धा के कारण समाप्त हो गया । ब्रिटिश अब अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए भारत में उत्तर की ओर बढ़ने लगे थे । 1857 ई० के आते–आते कुछ अधिकारियों को छोड़ कर अन्य सभी भारतीय थे। 1870 में छावनी के हमेशा के लिए बंद होने के कारण[49] अपने चरम पर पहुँची मुर्शिदाबाद शैली का एक बार फिर ह्रास हुआ ।

मुर्शिदाबाद शैली का कम्पनी काल में जो विकास हुआ वह उस समय के स्थानीय कलाकार की सतत साधना का ही परिणाम है कि मुर्शिदाबाद कम्पनी शैली के प्रमुख केंद्र के रूप में हमारे सामने आया और ऊँचायों को छुआ । बदलती परिस्थितियों में कलाकार ने भी स्वयं को समय की मांग के अनुसार बदला जिसके फलस्वरूप हमारे समक्ष एक नई व मिश्रित शैली प्रस्तुत हुई । समय–समय पर सत्ता में होने वाले परिवर्तन के अनुसार शैली में परिवर्तन करते–करते कलाकार परिवर्तन का आदी हो गया था। परिवर्तनों को लेकर वह नए ढंग से सोचने लगा । अब वह नए परिवर्तनों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण रखने लगा था । इसी कारण कलाकार ने यूरोपीय तकनीक व शैली को सीखने में रूचि दिखाई । अपना विषयवस्तु को देखने का दृष्टिकोण बदला । उदाहरणार्थ पहले बनने वाले तीज–त्यौहारों के चित्रों की तुलना में इस समय में बने तीज–त्यौहारों के चित्र अधिक विस्तृत तथा यथार्थ से परिपूर्ण लगते है। इन सबसे अलग एक बड़ा परिवर्तन यह आया कि कलाकार संरक्षण हेतु भारतीय शैली को लगभग भूल सा गया था ।

---

[48]- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The British p.25.
[49]- Mildred & Archer,W.G.:Indian Painting For The British p.25.

प्रत्येक परिवर्तन के सकारात्मक तथा नकारात्मक परिणाम होते है। यहां पर भी ऐसा ही हुआ । ऊपरोक्त सकारात्मक, नकारात्मक परिणामों से परे कम्पनी शैली से भारतीय कला शैली में बड़ा परिवर्तन आया तथा बाद में यह परिवर्तन, हम कह सकते है कि भारतीय चित्रकला के आधुनिक काल का आधार बना ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, गिरजि किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन, आगरा, 2005
2. अग्रवाल गिरजि किशोर : कला और कलम, अशोक प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, 1999
3. अग्रवाल, आर॰ ए॰ : कला विलास, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2007
4. चतुर्वेदी, ममता : समकालीन भारतीय कला, राजस्थानी हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2010

5- Archer, Mildred : Company Paintings, Victoria and Albert Museum, 1992
6- Archer, Mildred &Folk,T.Indian Miniature in Indian office library,Sothbay Parke Bernet ,London,1981
7- Guy, John : Arts of India, V & A Publications, 1990
8- Mildred & Archer,W.G.: Indian Painting For The British(1770-1880),Oxford UniversityPress,London,1955
9- Skelton,R.W.:Murshidabad Painting,Marg,vol.x,no.10,Dec.1956
10- http://en.wikipedia.org/wiki/company style
11- http://en.wikipedia.org/wiki/company style+School of Indian Painting